ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-10*November- 2021
Innovation The Research Concept

बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था में परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह एवं भारत की सदस्यता

Nuclear Suppliers Group in the Multilateral Export Control Regime and membership of India

Paper Submission: 10/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11//2021

तनुश्री शर्मा
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) का गठन 1974 में भारत के परमाणु परीक्षण के प्रतिक्रया स्वरूप किया गया था। वर्तमान में इसके 48 सदस्य राष्ट्र है। इसका लक्ष्य परमाणु ऊर्जा का उपयोग केवल शान्तिपूर्ण उद्देश्यों हेतु करने के लिए परमाणु प्रौद्योगिकी और हथियारो के वैश्विक निर्यात पर नियंत्रण रखना है। भारत सन् 2008 से परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह की सदस्यता के लिए निरन्तर प्रयासरत है। भारत को एनएसजी की सदस्यता प्राप्त होने पर बिना किसी विशेष समझौते के परमाणु तकनीक और यूरेनियम की प्राप्ति होगी। जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम होने के साथ ही बढती ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति होगी तथा भारत की अन्तर्राष्ट्रीय छवि सुदृढ होगी, किन्तु भारत के परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर न करने के कारण एवं चीन के पडोस में सशक्त देश की स्थापना न चाहने के कारण चीन द्वारा परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) में भारत की सदस्यता की प्राप्ति पर अवरोध उत्पन्न कर रहा है जबकि भारत के परमाणु संयम एवं नीति की तार्किकता के कारण ही भारत को एमटीसीआर, वासेनार अरेन्जमेन्ट एवं आस्टेलियन ग्रुप की सदस्यता प्राप्त हुई है।

The Nuclear Suppliers Group (NSG) was formed in 1974 in response to India's nuclear test. It currently has 48 member states. Its goal is to control the global export of nuclear technology and weapons to use nuclear energy only for peaceful purposes. India has been continuously striving for membership of the Nuclear Suppliers Group since 2008. IndiaOn attaining the membership of the NSG, it will get nuclear technology and uranium without any special agreement. With the reduction of dependence on fossil fuels, the increasing energy needs will be met and India's international image will be strengthened, but due to India not signing the Nuclear Non-Proliferation Treaty and not wanting to establish a strong country in the neighborhood of China, by China nuclear supplierIndia's membership in the group (NSG) is obstructed, while India's nuclear restraint and rationality of policy has led to India's membership of MTCR, Wassenaar Arrangement and Australian Group

मुख्य शब्दः परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह, वैश्विक निर्यात, सदस्यता हेतु प्रयासरत, उर्जा आवश्यकता, अवरोध, परमाणु संयम।

Keyword: Nuclear Suppliers Group, Global Exports, Striving for Membership, Energy, Necessity, Blockage, Nuclear Restraint.

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय यह मानते थे कि प्रजा तथा राष्ट्र की समृद्धि के लिए युद्ध की अपेक्षा शान्ति आवश्यक है। इस संबंध में शान्ति पर्व में भी उल्लेख है कि युद्ध का सदैव वर्जन करना चाहिए और अपने उद्देश्यो की प्राप्ति हेतु दण्ड की अपेक्षा अन्य तीन उपायों साम, दाम, भेद की सहायता लेने की बात कही गई है। अर्थात् राष्ट्र नीति को क्रियान्वित करने हेतु दण्ड के प्रयोग का उपाय सबसे अन्त में करने का उल्लेख किया गया है क्योंकि शम (शान्ति) एवं व्यायाम (उद्योग) पर ही राज्य का योगक्षेम (समृद्धि) निर्भर रहता है। इससे यह स्थापित होता है कि प्राचीन भारतीय आचार्य शान्ति के पोषक थे।

भारत लम्बे समय से निःशस्त्रीकरण एवं अहिंसा का पक्षधर रहा है। नेहरू, टाटा एवं भाभा के प्रयत्न से देश में 1945 में मुम्बई में टाटा इन्स्टीट्यूट आफॅ फण्डामेन्डल रिसर्च की स्थापना के साथ भारत में परमाणु ऊर्जा के कार्यक्रमो को प्रारम्भ किया। इस कार्यक्रम को प्रारम्भ करने हेतु जिन तीन महत्वपूर्ण गुणो का संयोग हुआ वे वैश्विक तथा शान्तिपूर्ण उद्देश्य, जनकल्याणकारी, संस्कार तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण थे। इसके साथ ही प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा परमाणु हथियारो के सर्वप्रथम उपयोग न करने की तथा परमाणु शक्ति के शान्तिपूर्ण उपयोग करने की तथा राष्ट्रीय हित एवं सुरक्षा हेतु विश्वसनीय एवं न्यूनतम परमाणु प्रतिरोध क्षमता विकसित करने की नीति जैसी आठ सूत्री परमाणु नीति घोषित की गई जिसमें भारत को अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकार्यता प्रदान की और इसी परमाणु नीति की

अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकार्यता का परिणाम है कि 1998 के पश्चात् भारत द्वारा एनपीटी एवं सीटीबीटी पर हस्ताक्षर न करने के बावजूद भी भारत के साथ 14 देशों ने असैन्य परमाणु सहयोग समझौता करके यूरेनियम आपूर्ति सुनिश्चित की है साथ ही भारत को बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था के अन्तर्गत मिसाईल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (एमटीसीआर) वासेनार अरेन्जमेन्ट और ऑस्टेलियन ग्रुप में सदस्यता प्राप्त हुई जिससे परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) में सदस्यता की प्राप्ति सुदृढ हुई है यह भारत के परमाणु नीति की तार्किकता एवं संयम का परिचय है। इस शोध में भारत की परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह की सदस्यता प्राप्ति की आवश्यकता का अध्ययन किया जाएगा।

अध्ययन का उद्देश्य

1. परमाणु निःशस्त्रीकरण एवं परमाणु अप्रसार का सैद्धान्तिक विवेचन करना।
2. अन्तर्राष्ट्रीय निःशस्त्रीकरण की सैद्धान्तिक विवेचन एवं इसकी आवश्यकता का अध्ययन करना।
3. पोकरण द्वितीय के बाद भारत के प्रति अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।
4. भारत के परमाणु संयम एवं नीति की तार्किकता एवं सफलता की विवेचना करना।
5. बहुपक्षीय निर्यात नियत्रंण व्यवस्था में भारत की सदस्यता की आवश्यकता एवं महत्व का अध्ययन करना।
6. भारत को परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह की सदस्यता प्राप्त न होने की बाधाओं का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

विश्व में हथियारो के निर्यात को नियंत्रित करने हेतु चार प्रमुख बहुपक्षीय व्यवस्थाएं परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) एमटीसीआर, वासेनार अरेंजमेन्ट, ऑस्टेलियन ग्रुप है। इन चारो समूह में से किसी समूह में सम्मिलित होने के लिए पुराने सदस्य देशों की आम सहमति आवश्यक होती है। भारत ने इस समूह में सम्मिलित होने के लिए बहुत प्रयास किया है और इसी प्रयास के अन्तर्गत भारत ने 7 जून 2016 को मिसाईल प्रोद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (एमटीसीआर) में 35 वें सदस्य के रूप में मान्यता प्राप्त की है परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) की सदस्यता चीन के हस्तक्षेप के कारण भारत को अभी तक प्राप्त नही हुई है। इस शोध में भारत के परमाणु संयम के महत्व को नवीन दिशा दी गई है।

इस शोध में निम्न परिकल्पनाओ का परीक्षण करने का प्रयास किया गया है।

1. शक्ति और सुरक्षा पाने की लालसा से नाभिकीय युग की शुरूआत हुई जो वर्तमान तक विद्यमान है।
2. भय एवं असुरक्षा के कारण आज विश्व में परमाणु शस्त्रो की प्रतिस्पर्धा है।
3. सम्पूर्ण विश्व में भारत की परमाणु नीति सराहनीय है।
4. भारत की परमाणु नीति की तार्किकता के कारण ही एन.पी.टी. एवं सी.टी.बी.टी. पर हस्ताक्षर न करने के बावजूद बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था में भारत को सदस्यता प्राप्त हुई है।
5. परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह की सदस्यता से भारत को अन्य देशो से परमाणु तकनीक एवं यूरेनियम की प्राप्ति हो सकेगी।

विषय वस्तु

बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था के अन्तर्गत भारत के तीन समूहो की सदस्यता प्राप्त करने से भारत का परमाणु अप्रसार क्षेत्र मे कद बढने के साथ ही महत्वपूर्ण तकनीको को प्राप्त करने में सहायता प्राप्त हुई है। चीन द्वारा स्वयं को वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने तथा पडोस में कोई सशक्त देश न चाहने के कारण परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) में भारत की सदस्यता की दावेदारी हेतु बाधा उपस्थित कर रहा है किन्तु भारत सदस्यता प्राप्ति हेतु निरन्तर प्रयासरत है और तीन समूहो एमटीसीआर, वासेनार अरेन्जमेन्ट एवं ऑस्टेलियन ग्रुप में सदस्यता प्राप्ति से भारत की एनएसजी में दावेदारी और सुदृढ हुई है।

परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी)

इसका गठन 1974 में भारत के परमाणु परीक्षण के प्रतिक्रियास्वरूप किया गया था। परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) 48 देशो का समूह है जिसका लक्ष्य परमाणु सामग्री, तकनीक एवं उपकरणो के निर्यात को नियंत्रित करना है। परमाणु हथियार निर्मित करने के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्री की आपूर्ति से लेकर नियंत्रण तक सभी इसी के अन्तर्गत आते है। परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह परमाणु प्रौद्योगिकी और हथियारो के वैश्विक निर्यात पर नियंत्रण रखता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि परमाणु ऊर्जा का उपयोग केवल शान्तिपूर्ण उद्देश्यो हेतु ही किया जाए। चीन के विरोध के कारण भारत अभी तक एनएसजी का सदस्य नही बन सका है। जबकी भारत द्वारा 2008 से ही एनएसजी में सदस्यता प्राप्त करने के प्रयास किये जा रहे है।

चीन द्वारा एनएसजी में भारत की सदस्यता के विरोध का कारण

1. चीन के विरोध का आधार भारत का परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) पर हस्ताक्षर नही करना है। चीन चाहता है कि भारत एनपीटी पर हस्ताक्षर करे और परमाणु कार्यक्रम को भारत अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु उर्जा एजेन्सी की निगरानी के अन्तर्गत लेकर आए किन्तु भारत ऐसा करने को तैयार नही है।
2. चीन स्वयं को वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित कर रहा है। चीन नही चाहता है कि उसके पडोस में कोई सशक्त देश स्थापित हो।
3. पिछले कुछ वर्षो से भारत संयुक्त राष्ट्र संघ के अंग सुरक्षा परिषद् में सुधार की मांग कर रहा है। सुरक्षा परिषद् के पांच स्थायी सदस्यो में से चार देश अमेरिका, रूस, बिटेन तथा फ्रांस भारत के सुरक्षा परिषद् में सम्मिलित किए जाने के पक्ष में है लेकिन चीन नही चाहता है कि भारत को भी सुरक्षा परिषद् में स्थायी सदस्यो जितनी शक्ति प्राप्त हो।
4. दक्षि
5. णी चीन सागर विवाद और इस पर भारत की प्रतिक्रिया तथा भारत-अमेरिका-जापान के मध्य बढता हुआ परस्पर सहयोग चीन को रास नही आ रहा है। इसलिए चीन भारत को वैश्विक मंचो से दूर रखने का प्रयास करता है।
6. चीन को भय है कि भारत इन संस्थाओ के सदस्यो से प्राप्त सहयोग का उपयोग विवादित बहुपक्षीय मुद्दों पर चीन के विरूद्ध करेगा।

भारत को परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह की आवष्यकता क्यो

1. रूस, अमेरिका और फ्रांस के साथ भारत ने असैन्य परमाणु समझौता किया हुआ है। फ्रांसीसी परमाणु कम्पनी अरेवा जैतापुर (महाराष्ट्र) में, अमेरिकी परमाणु कम्पनी मिठी वर्दी (गुजरात) में तथा कोवाडा (आंध्रप्रदेश) में विद्युत संयंत्र लगा रही है एनएसजी की सदस्यता प्राप्त करने से भारत इन संयंत्रो के लिए परमाणु तकनीक और यूरेनियम बिना किसी विशेष समझौते के प्राप्त कर सकेगा।
2. एनएसजी की सदस्यता प्राप्त करने से परमाणु संयंत्रो से निकलने वाले कचरे का निस्तारण करने में भी सदस्य राष्ट्रो से सहायता प्राप्त होगी।
3. पेरिस जलवायु सम्मेलन में प्रकट की गई प्रतिबद्धता के अनुसार भारत जीवाश्म ईधन पर अपनी निर्भरता को कम करने के साथ-साथ अपनी ऊर्जा मांग का कुल 40 % स्वच्छ ऊर्जा के रूप में उत्पादित करना चाहता है। इसके लिए भारत को परमाणु ऊर्जा उत्पादन बढाने हेतु इस समूह की सदस्यता लेना आवश्यक है।
4. भारत परमाणु ऊर्जा व्यापार में भागीदार बनने का इच्छुक है। इसके लिए परमाणु ऊर्जा से संबंधित अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी प्राप्त करने हेतु एनएसजी की सदस्यता आवश्यक है।
5. भारत में नवाचार को बढावा देने हेतु परमाणु ऊर्जा उपकरणो के व्यावसायीकरण को भी बढावा दिया जा सकता है।
6. एनएसजी की सदस्यता से भारत की अर्न्तराष्ट्रीय छवि को और सशक्त रूप दिया जा सकता है। इस समूह की सदस्यता भारत की संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में स्थायी सदस्यता के दावे को और सुदृढता प्रदान करेगी।

निष्कर्ष

इस प्रकार इस शोध से निष्कर्ष निकाल सकते है कि इस प्रकार भारत के अन्तर्राष्ट्रीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्थाओ से जुडने से परमाणु अप्रसार क्षेत्र में देश का कद बढने के साथ-साथ महत्वपूर्ण प्रोद्यौगिकियो को प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नही करने के बावजूद भारत अप्रसार के क्षेत्र में अपनी पहचान बना पाएगा और अप्रसार के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को वैश्विक पहचान प्राप्त होगी। चीन के ऑस्ट्रेलियन ग्रुप, वासेनार अरेन्जमेन्ट और एमटीसीआर में सदस्य नही होने से भारत का इन तीनो समूहो की सदस्यता प्राप्त कर लेना अपने प्रतिद्वंद्वियो पर भारत की रणनीतिक विजय है। अतः भारत को सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्यों एवं अन्य देशों का सहयोग लेते हुए तथा इन देशों के माध्यम से चीन पर दबाव बनाते हुए परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह के सदस्य प्राप्ति हेतु निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शर्मा, कुमार योगेन्द्र, "प्राचीन भारतीय राजनय एवं युद्ध तकनीक" अल्का प्रकाशन, कानपुर, 2008 पृ. 57*
2. *कश्यप, अर्जुन, "धर्मशास्त्र का इतिहास" वाराणसी प्रकाशन, 1994, भाग-2 पृ. 689*
3. *रातू, कुमार कृष्ण, "भारतीय परमाणु परीक्षण और निःशस्त्रीकरण" प्वाइंटर पब्लिशर्स, जयपुर, 1999, पृ. 83*
4. *https://en.m.wikipedia.org/Nuclear_suppliers_group*
5. *द हिन्दू, दिल्ली, 30 दिसम्बर, 2017*
6. *क्रॉनिकल ईयर बुक, 2020*
7. *वर्ल्ड फोकस, 2020*
8. *राष्ट्रीय सहारा, दिल्ली 2020*
9. *जनसत्ता नई दिल्ली जनवरी 2020*